



असन्ध। खाद्य सप्लाई इंस्पेक्टर जीवन टूर्ण को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.ऊषा।



नवांशहर (पंजाब)। पंजाब परिवहन के उपाध्यक्ष डॉ. कमलजीत सोई को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कांता बहन तथा अन्य।



भवानीगढ़। संसदीय सचिव प्रकाश गर्ग को परमात्म अवतरण का संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.राजेन्द्र कौर बहन तथा अन्य।



ब्रह्मपुर। रेवन्यू डिविजनल कमिश्नर लोखशमी नारायण नायक को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.संयुक्ता बहन।



देहरादून। विधायक सहदेव सिंह पुन्डीर व राघव जी को आध्यात्मिक संदेश देते हुए ब्र.कु.कनक बहन।



धूरी (पंजाब)। सर्वकार संघ के प्रधान दर्शन कुमार खुर्मी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मूर्ति बहन तथा अन्य।

प्रश्न -मैं एक कुमार हूँ। मैं ये जानना चाहता हूँ कि मैं अपनी पवित्रता को श्रेष्ठ कैसे बनाऊं ताकि स्वप्न तक भी कोई व्यवधान न रहे?

उत्तर - आत्माओं को पावन बनाने के लिए स्वयं भगवान को आना पड़ता है। वे आकर राजयोग सिखाते हैं जिससे हम सर्वशक्तिवान से शक्तियां लेकर इस माया पर विजयी बनते हैं। यदि कोई राजयोग का अभ्यास चार घण्टे प्रतिदिन न करे तो चाहे वह कोई भी हो, उसे काम सतायेगा ही। यही कारण है कि सन्यासी भी पवित्रता का सुख नहीं ले पाते।

आप श्रेष्ठ पवित्र बनकर भगवान को मदद करना चाहते हैं यह सर्वोत्तम पुण्य है। बिना साधना पवित्रता श्रेष्ठ नहीं हो पायेगी इसलिए राजयोग की साधना के साथ सम्बन्धों में न्यारेपन का अभ्यास भी करें। न्यारे न होने से एक दो के इतने प्यारे बन जाते हैं कि वासना हावी हो जाती है।

अमृतवलेले योग का आनंद लें। स्वयं को स्मृति-स्वरूप रखने के लिए एक अव्यक्त मुरली प्रतिदिन अध्ययन करें। सारे दिन में कुछ भी खाते-पीते, पानी, दूध या भोजन को दृष्टि देकर सात बार संकल्प करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ, फिर सेवन करें। एक संकल्प दृढ़ता पूर्वक कर लें कि मेरा जीवन दूसरों को व प्रकृति को पवित्र वायब्रेशन्स देने के लिए है। तो कम से कम पाँच बार इन सबको 'मैं पवित्रता का सूर्य हूँ' इस स्वमान में स्थित होकर वायब्रेशन्स दें। इससे छः मास में ही आपकी पवित्रता आनंदकारी हो जायेगी।

प्रश्न -मैं एक कन्या हूँ। दो वर्ष से ज्ञान में हूँ। ज्ञान से पूर्व मेरा किसी से प्रेम हो गया था। अब मैं उसे भूल नहीं पा रही हूँ। मैं अब योगी बनना चाहती हूँ व सबकुछ भूलना चाहती हूँ।

उत्तर - दैहिक प्रेम बड़ा ही दुखकारी है। इस प्रेम ने बहुतों को कष्ट पहुंचाया है और प्रभु-प्रेम के मार्ग में तो यह गंदा नाला है। आपने सुंदर संकल्प किया है उसे भूलने का। याद रखना है श्रेष्ठ स्मृतियां पुरानी स्मृतियों को विस्मृत कर देती हैं। इसलिए कुछ श्रेष्ठ स्मृतियों का अभ्यास छः मास तक करो।

मैं एक श्रेष्ठ आत्मा हूँ और वह भी आत्मा है। उसे आत्मा देखने के अभ्यास से आकर्षण समाप्त होता जाएगा। यह संसार एक नाटक है। अब यह नाटक पूरा हो रहा है, हम सबको परमधाम वापिस जाना है। इससे पूर्व हमें अपने प्राणेश्वर परमपिता से सर्वस्व प्राप्त करना है। मैं वही ईष्टदेवी हूँ,

जिनकी मंदिरों में पूजा हो रही है। ये तीनों अभ्यास रोज पच्चीस बार अवश्य करना। साथ-साथ चिन्तन भी करना कि देहधारियों से तो हजार वर्ष प्यार किया अब तो भगवान से ही प्यार करना है। इस प्यार में परम सुख है।

प्रश्न -मैं एक कुमारी हूँ, मेरा एक कुमार से प्यार हो गया है। हम दोनों लव मैरिज करना चाहते हैं, फिर ज्ञान में भी चलना चाहते हैं, परन्तु मम्मी-पापा मान नहीं रहे हैं। मैं योग का क्या प्रयोग करूँ?

उत्तर - शादी के लिए योग के प्रयोग नहीं हैं। योग तो आत्मा को पावन बनाने के लिए है। आपको बुद्धिमान बनकर सोचना है कि प्यार अंधा होता है। आपको ये पता नहीं कि उस लड़के का स्वभाव कैसा है, उसका घर या उसके माँ-बाप कैसे हैं? आज तक हमने देखा है ना तो लव मैरिज सफल हुई है और ना ही लड़की सुखी हुई है। एक लड़की ने भावुक होकर एक लड़के से कोर्ट मैरिज की, जब घर गई तो देखा कि वह तो झोपड़ी जैसे घर में रहता है। दो चार दिन में ही सास की डांट पड़नी शुरू हुई। एक मास में ही तलाक हो गया। बाप ने कहा -कहीं भी जाओ, इस घर में तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं। ऐसे अनगिनत किस्से हैं। शादी करके आप पवित्र नहीं रह सकेंगी। इसलिए अब समझदार बनो। यदि शादी की



मन की छाते

- ब.कु.सूर्य

इच्छा ही है तो माँ-बाप जहां करें, उसे स्वीकार करो। परन्तु हम तो ये कहेंगे कि प्रभु-मिलन का समय है, भाग्य बनाने की बेला है, पुण्य जमा करने का वक्त है, भगवान को सहयोग दो।

प्रश्न -मेरा एक ही लड़का है। ग्यारहवीं क्लास में पढ़ता है, परन्तु बुरे संग में आकर बिगड़ गया है, व्यसनों में फंस गया है। रात को बारह बजे घर आता है, पढ़ाई बिल्कुल नहीं करता। घर में आकर झगड़ा करता है। उसके पापा तो हार्ट-पेशेन्ट बन गये हैं। मैं बहुत चिंतित हूँ, उसे सुधारने का उपाय बताइये?

उत्तर - एक स्थूल तरीका भी है, परन्तु

सकारात्मक ...

पेज 1 का शेष...

आहवान करते हुए कहा कि हम सभी मिलकर सामूहिक रूप से एक ऐसा प्रयास करें जिससे बेहतर समाज बन सके। ब्रह्माकुमारी संस्था का उद्देश्य ही है मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना के लिए आध्यात्मिक ज्ञान का जन-जन तक प्रसार। मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति के संयोजक प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि हम अपने जीवन में एक ऐसी साफ और स्वस्थ प्रवृत्ति बनायें जिससे हमारी कार्यशैली प्रेरणास्रोत बने।

सामाजिक परिवर्तन के लिए मीडिया को लगातार प्रयास करना चाहिए।

मीडिया प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.शान्तनु ने सभी का धन्यवाद व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु.चन्द्रकला ने किया। सुरमंदिर डांस एकेडमी कटक से आए कलाकारों ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया।

शायद आप न कर पायें। जब वो रात्रि को देर से आए तो दरवाजा ही न खोलो। परन्तु इसके लिए तो मजबूत दिल चाहिए। आप प्रतिदिन 108 बार दो स्वमान का अभ्यास करें -मैं एक महान आत्मा हूँ और मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। इससे आपके बोल में प्रभाव आयेगा। उसे भी इसी दृष्टि से देखना कि वह देव कुल की आत्मा है। रोज सबेरे पांच या छः बजे दस मिनट तक उसे अच्छे वायब्रेशन्स देना। योग करके इस स्वमान में स्थित होना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और मुझसे किरणें निकलकर उस आत्मा को जा रही हैं। ऐसा इक्कीस दिन तक करना। भोजन बनाते हुए 108 बार याद करना कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ और जब उसे खिलाओ तो संकल्प करना कि इस ब्रह्मा भोजन से इसका चित्त शुद्ध हो। बीमार होने से तो समस्या बढ़ेगी ही। इसलिए धैर्यपूर्वक और हिम्मत से इस समस्या का हल करें।

प्रश्न -वर्तमान समय प्रमाण बापदादा बार-बार इशारा दे रहे हैं कि अन्तिम समय अचानक आना है और अचानक के पेपर में पास होने के लिए विशेष दो बातों पर अन्डरलाइन करनी है। एक है व्यर्थ संकल्प से मुक्त और दूसरा है व्यर्थ समय से मुक्त। तो कैसे बनेंगे इन दोनों बातों से मुक्त?

उत्तर - व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए शुद्ध संकल्पों के खजाने को बढ़ायें और शुद्ध संकल्पों का आधार है रोज की ईश्वरीय मुरली।

व्यर्थ संकल्पों का कारण है कमजोर मन। तो मन को शक्तिशाली बनायें। मन को शक्तिशाली बनाने के लिए रोज सारे दिन में कम से कम आठ बार पाँच स्वरूपों की ड्रिल करें।

व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए तीन बातें छोड़नी हैं और तीन बातें धारण करनी हैं। परचिन्तन को छोड़ स्वचिन्तन करना है। परदर्शन छोड़ स्वदर्शन करना है। परमत और मनमत को छोड़ श्रीमत पर चलना है।

व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए सदा स्वमान में रहें, क्योंकि स्वमान की कमी से अभिमान उत्पन्न होता है। जहां अभिमान है वहाँ अपमान की बहुत जल्दी फीलिंग होती है।

व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए सदा पॉजिटिव सोचे। यदि किसी भी कारण से निगेटिव संकल्प चले तो अपने से पूछे कि निगेटिव सोचने से कुछ फायदा है? यदि नहीं तो मैं क्यों सोच रहा हूँ? नकारात्मकता व्यर्थ का बीज है।

व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए ड्रामा के ज्ञान को यूज करें। ड्रामा की हर सीन में कल्याण है, क्योंकि कल्याणकारी बाप का हाथ-साथ है।

व्यर्थ संकल्प को खत्म करने के लिए श्रीमत की लगाम टाईट करें। चेक करें अमृतवलेले से लेकर रात्रि तक हमार हर कर्म श्रीमत मर्यादा प्रमाण रहा? और यदि नहीं तो क्यों?